ISSN: 2583-0511 (Online), www.pashupalakmitra.in

डेरी पशुओं का शीत ऋतु में प्रबंधन

डॉ. विकास सचान, डॉ. अनुज कुमार एवं डॉ. कविशा गंगवार

पशु चिकित्सा विज्ञान विश्वविद्यालय, दुवासु, मथुरा

डेरी पशुओं की उत्पादन क्षमता पर पशु प्रबंधन तकनीकियों का प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष प्रभाव होता है।वातावरणीय तापमान के बहुत अधिक अथवा बहुत कम हो जाने की अवस्था में पशुओं की उत्पादन क्षमता पर गहरा असर पड़ता है।शीत ऋतु में वातावरण के तापमान के अत्यधिक गिर जाने की अवस्था में पशुओं को अत्यधिक तनाव की स्थिति से गुजरना पड़ता है जिसके कारण पाचन प्रक्रिया में परेशानी, प्रजनन क्षमता में कमी , श्वास संबंधी बीमारियों इत्यादि हो जाती है। अंततोगत्वा उत्पादन क्षमता अत्यधिक गिर जाती है जिसके कारण पशु पालक को आर्थिक रूप से अच्छा खासा नुकसान उठाना पड़ जाता है।

पशुओं में शरीर के तापमान का गिर जाना , नथुनों से पतला पानी आना , स्वाँस संबंधी परेशानियां होना, दुग्ध उत्पादन कम हो जाना, चारे और पानी का कम सेवन करना , शरीर के ऊपर रोयें अथवा बालों का खड़े रहना इत्यादि पशु को सर्दी लग जानेके सामान्य लक्षण है। शीत ऋतु में पशु उत्पादन तथा स्वास्थको बनाए रखनेके लिए प्रबंधन संबंधी कुछ महत्वपूर्ण बिंदुओं का ध्यान रखा जा सकता है।

1. शीत ऋतु में पोषण प्रबंधन का बहुत ही महत्वपूर्ण स्थान है। ठंडे मौसम में पशु के शरीर को तनाव से बचे रहने के लिए अत्यधिक ऊर्जा की आवश्यकता होती है। इस मौसम में पशु को बहुत अधिक हरा चारा नहीं देना चाहिए क्योंकि इससे अपच होने एवं गैस बनने की परेशानी हो सकती है। अत्यधिक हरे चारे की मात्रा होने से पशु प्रजनन पर भी प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। सूखा चारा एवं भूसा पाचन के दौरान अधिक ऊर्जा का उत्पादन करता है अतः सर्दी ऋतु में सूखा चारा एवं भूसा अच्छी मात्रा में हमें देना चाहिए। भूसा, हरा चारा, दाना, खनिज लवण एवं नमक की पर्याप्त मात्रा वाला संतुलित आहार देना लाभदायक होता है। चारे में मूंगफली , सरसों, सोयाबीन अथवा बिनौली की खल देना बहुत ही लाभदायक होताहै, इनसे प्रोटीन की पूर्ति अच्छी तरह से होती है जिससे दुग्ध उत्पादन अत्यधिक ठंडी के मौसम में भी गकम नहीं होता है। छोटे बछड़ों जिनकी उम्र तीन से चार महीनों तक की है उनको भी बाकी दिनों की अपेक्षा थोड़ा अधिक मात्रा में दूध प्रदान करना चाहिए। अधिक सर्दी के दिनों में गुड अजवाइन सोंठ इत्यादि पशुओं के लिए लाभ दायी होता है। सर्दियों में पशुओं को साफ स्वच्छ एवं हल्का गुनगुना पानी पीने के लिएदेना चाहिए।

2. पशुओं के अवास में सीधी ठंडी हवा नहीं जानी चाहिए। इसके लिए दरवाज़े एवं खिड़कियाँ ज्यादा समय के लिए बंद रहनी चाहिए परंतु साथ ही साथ हवा आने जाने का उचित प्रबंध होना चाहिए। खिड़कियों पर सूखी घास अथवा जुट की बोरियों के बने पर्दों का इस्तेमाल करना चाहिए। सर्दियों में फ़र्श के संपर्क में आने से भी पशुओं को सर्दी लग जाती है , अतः फ़र्श के ऊपर सूखी पुआल इत्यादि की लगभग छह इंच मोटी परत बिछानी चाहिए। फर्श के गीले रहने की अवस्था में पशुओं को सर्दी लगने के साथ ही साथ बुख़ार , डायरिया, न्यूमोनिया इत्यादि होने के बहुत अधिक आसार होते हैं तथा अतः पशु के आवास में पशु का मूत्र मल अथवा प्रयोग किए जाने वाले पानी इत्यादि के आसानी से

ISSN: 2583-0511 (Online), www.pashupalakmitra.in

बहकर बाहर जाने के लिए नालियों की उचित व्यवस्था होनी चाहिए। पशु आवास की फ़र्श उचित ढलान के साथ होनी चाहिए जिससे पानी अथवा मल मूत्र वहाँ पर इकट्ठा न हो सके। फर्श को सूखा रखने के लिए लकड़ी की कतरन धान का छिलका रेत इत्यादि का उपयोग किया जा सकता है। साथ ही साथ फर्श से लगने वाली ठंड से बचने के लिए उपयोग किये गये पुआल , भूसा अथवा धान का छिलका इत्यादि को नियमित रूप से बदलते रहना चाहिए। आवास के अंदर के वातावरण को गर्म रखने के लिए अधिक वाट के बल्ब अथवा हीटर का इस्तेमाल किया जाता है। कुछ पशुपालक आग जलाने अथवा धुआं करने की प्रक्रिया को भी अपनाते हैं परंतु इस अवस्था में पशु आवास के अंदर धुआँ इकट्ठा ना होने देने का प्रबंध अवश्य सुनिश्चित करना चाहिये क्योंकि इससे श्वांस संबंधी परेशानियां हो सकती है।

3. पशुओं के शरीर पर गर्म सरसों आदि के तेल की मालिश तथा प्रतिदिन धूप दिखाने से सर्दी में अत्यधिक आराम मिलता है। प्रतिदिन धूप में पशु को थोड़ा टहलने देने से पशु स्वास्थ्य पर अनुकूल असर पड़ता है। पशुओं, मुख्यतः छोटे बछड़ों के शरीर पर जूट के बोरे, कंबल इत्यादि डालने से शरीर गर्म रहता है एवं सर्दी से बचाव होता है। पशुओं को सर्दी के मौसम में प्रतिदिन पानी के संपर्क में अथवा नहलाने से बचना चाहिए। प्रतिदिन ब्रश अथवा सूखे कपड़े के मदद से शरीर के ऊपर लगी हुई गंदगी को हटाना अधिक अच्छा होता है, इससे न केवल पशु साफ सुथरा रहता है बल्कि रक्त संचार में वृद्धि होने के कारण शीत ऋतु में होने वाले तनाव से निपटने में भी पशु को मदद मिलती है। छोटे बच्चो में शारीरिक गर्मी पैदा करने की क्षमता व्यस्त पशुओं से कम होने के कारण उनकी देखभाल करना अत्यंत आवश्यक होता है। छोटे पशुओं को गर्म स्थानों में रखने, शरीर को कंबल इत्यादि से ढकने तथा साधारण दिनों की अपेक्षा थोड़ा अधिक मात्रा में दूध प्रदान करने से उन्हें सर्दी ऋतु में अस्वस्थ्य होने से बचाया जा सकता है। पशुओं को वाह्य परजीवी तथा अंतः परजीवी से बचाने के लिए पशुचिकित्सक की यथासंभव मदद लेनी चाहिए तथा साथ ही साथ पशु आवास को भी उचित परजीवी नाशक एवं जीवाणुनाशक पदार्थ से साफ करते रहना चाहिए। सर्दियों में पशु के थनों की भी उचित देखभाल करनी चाहिए क्योंकि सर्दी रुथ में दूध देने वाले पशुओं के थनों की चटकने अथवा दरारें होने की संभावना प्रबल होती है। ऐसे पशुओं में प्रतिदिन दूध दुहने के बाद थनोंको धो कर साफ सुथरा एवं सुखा देना चाहिए और बाद में तेल अथवा किसी नमी बनाए रखने वाले पदार्थसे मालिश करनी चाहिए।एक ही आवास में बहुत अधिक पशुओं की नहीं बांधना चाहिए क्योंकि अत्यधिक अमोनिया के उत्पादन से उन्हें स्वास्थ्य संबंधी एवं अन्य स्वास्थ्य संबंधी परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है। प्रति पशु तीन से चार स्क्वायर मीटरभूमिका उपयोग करना लाभदायक होगा।

उपर्युक्त बताए गए सुझावों का पालन करके पशुपालक अपने पशुको शीत ऋतु में होने वाली परेशानियों से बचा सकता है। वैज्ञानिक विधियों का प्रयोग पशु प्रबंधन में कर के पशु की उत्पादकता सर्दी ऋतु के अत्यधिक तनाव वाले वातावरण में भी बनाए रखी जा सकती है। जिससे पशुपालक सर्दी ऋतु में भी पशु के अच्छे स्वास्थ्य को बनाए रखते हुए अधिकाधिक लाभ कमा सकते हैं।